अथवा

'आज भी खरे हैं तालाब' के आधार पर जल संरक्षण के बारे में बताइए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (6+6=12)

(क) औद्योगीकरण और पर्यावरण असंतुलन

(ख) 'बाबा बटेसर नाथ' में ग्रामीण परिवेश का चित्रण

(ग) 'पृथ्वी रोदन' कविता में प्रकृति-प्रेम

(घ) तालाबों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व



[This question paper contains 8 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 1227** **L**

Unique Paper Code : 2053102005

Name of the Paper : Paryavaran aur Hindi Sahitya

Name of the Course : **BA (Hons.) Hindi DSE/GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : (10+10+10)

(क) मकड़ियों के जाल मुँह पर,

और सिर के बाल मुँह पर,

मच्छरों के दंश वाले,

दाग काले-लाल मुँह पर,

बात झंझा वहन करते,

चलो इतना सहन करते,

कष्ट से ये सने जंगल,

नींद मे डूबे हुए-से

ऊँघते अनमने जंगल।

**अथवा**

सब ग्रह गाते, पृथ्वी रोती।

ग्रह-ग्रह पर लहराता सागर

ग्रह-ग्रह पर धरती है उर्वर,

ग्रह-ग्रह पर बिछती हरियाली,

ग्रह-ग्रह पर तनता है अम्बर,

ग्रह-ग्रह पर बादल छाते हैं, ग्रह-ग्रह पर है वर्षा होती।

सब ग्रह गाते, पृथ्वी रोती।



3. 'पृथ्वी रोदन कविता में' प्रकृति के विविध रूप को स्पष्ट कीजिए। (12)

**अथवा**

'सतपुड़ा के घने जंगल कविता में व्यक्त प्रकृति की विविधता को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

4. 'परती परिकथा' उपन्यास के आधार पर ग्रामीण संस्कृति में प्रकृति की उपस्थिति किस रूप में है? विस्तृत विवेचना कीजिए। (12)

**अथवा**

'कुईयाँजान' उपन्यास के आधार पर जलसंकट की समस्या के बारे में बताइए।

5. विद्यानिवास मिश्र लिखित हल्दी-दूब और दधि-अच्छत निबंध में निहित प्रकृति के लोकरंग पर प्रकाश डालिए। (12)

में भी हरद दूब दि अक्षत मूला की गीतियों की स्फूर्ति के पीछे वह भटक जाता है। चारों ओर से लोग मुझसे प्रश्न पर प्रश्न करते हैं कि तुम अपनी प्रतिभा क्यों बिखरा रहे हो, क्यों नहीं हमारे पंक्ति बंधन में आकर उसको एक दिशा में आगे बढ़ाते, युगपथ छोड़कर किन पिच्छिल पगवीधियों पर विभ्रांत हो। मैं किस किस को और कया जवाब दूँ? उन्हें कैसे समझाऊं कि मेरे ये संस्कार ही मेरे अस्तित्व हैं. में इनको छोड़कर कुछ नहीं। इस अनंत शून्य में तिरते हुए ये तिनके मिले हैं, उन्हें छोड़कर चलने पर मेरा आसरा टूट जाएगा।

2. पर्यावरण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए जीवन में प्रकृति के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। (12)

**अथवा**

गाँधी के पर्यावरण चिंतन की विवेचना कीजिए।



(ख) ... ग्लेशियर सिकुड़ रहे थे। बर्फीली चोटियां बर्फ-रहित हो रही थीं। समुद्र का गर्भ मचलती मछलियों और तरह-तरह के जीवों से खाली हो चुका था। नदियों का जाल पानी से भरा वीरान मैदानों में फैलता जा रहा था। फिर एकाएक नदियों का फैलाव सिमटने लगा और वे लकीरों में बदल गई, फिर वे बारीक लकीरें भी धरती पर से मिट गई और मरुस्थल फैल गए। यहां से वहां तक बालू-ही-बालू टीले-ही-टीले पानी की कमी और गरमी से उनके हलक में कांटे चुभने लगे और वे लू के थपेड़ों में बंजर धरती पर 'पानी... प्यास... पानी... पानी कहते घूम रहे थे। शरीर झुलस रहा है, पैर जल रहे हैं, धूप तेज है, मगर पानी की एक बूंद भी उन्हे कहीं नजर नहीं आ रही है। कहीं किसी पेड़ की छांव नहीं. कहीं किसी घर का साया नहीं। उन्हें लगता है कि उनका दम बस कुछ देर में निकलने वाला है और मूर्च्छित होने से पहले वह आंख खोलकर आखिरी बार कहते हैं- 'पानी!' इसके बाद उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। चारों ओर गिद्ध-ही-गिद्ध उड़ रहे हैं। उनके पंख टकराने से जो आवाज निकल रही है वह है सिर्फ 'पानी... पानी' की...

**अथवा**

जैकिसन आज दरभंगा के टावर चौक से रुपये के दस बड़े आम ले आया था- 'बंबई' आम। लाया तो था बच्चों के नाम पर। लेकिन माँ ने नहीं माना बोली - ले! तू कहाँ का भीखम पितामह है। तेरे बेटे आम खाएँगे तो मेरा बेटा नहीं खाएगा? "बाल्टी में पड़े थे, उठाकर बड़े आम बुढ़िया ने जैकिसन की थाली में डाल दिए थे। अहीरों का यह खानदान पिछली पाँच पीढ़ियों से इकलौता ही चला आया था। जैकिसन अपनी माँ को बेटा भी था, बेटी भी था; जेठा, मँझला और छोटा सबकुछ अकेला वहीं था। हाँ, अब आकर इस पीढ़ी में दैव की दया से दो बच्चे हुए थे एक फिर होने वाला था।

(ग) अब मैं देख सकता हूँ अचानक उजाले में पूर्व में एक छोटा सा लाल पिंड, एक सुर्ख आँख सा डिस्क। उसे देखकर मैं उसी तरह चौंक जाता हूँ जैसे पहली बार बाइबिल में यह वाक्य पढ़कर



रोमांचित हो उठा था- लेट देयर बि लाइट एण्ड देयर वॉज लाइट। मैंने कभी ऐसा आलोक नहीं देखा और तब मुझे सहसा महसूस हुआ कि यह आज का दैनिक उजाला नहीं, कोई प्रागैतिहासिक आलोक है, जब दुनिया पहली बार अँधेरे से बाहर आई थी। मेले का मैदान एक घोंसले सा धूप में आँधा पड़ा है दूर गंगा को छूता हुआ। पीली सफेद बालू का द्वीप, जिसे गंगा एक कैंची की तरह काटकर आगे बढ़ गयी है जैसे जमुना की मंधर गति से ऊबकर स्वयं बेचौनी में आगे बढ़कर छोटी बहिन से मिल रही है।

**अथवा**

मैं अवश हूँ। फीरोजी, सुरमई, मूंगिया और चंपई इन रंगों से घिरा हुआ भी नवांकुरित दूब की हरित पीत आभा की ओर मेरा मन दौड़ ही जाता है और धरती, माटी, मानव और आस्था, ईमान, सत्य, चेतना और युगमानस इन सभी उपासना मंत्रों के कोलाहल